तीसरी सहस्राब्दी में मानवता की शिक्षा

वैश्विक घोषाणपत्र 2024

सारांश

यह घोषणापत्र 'तीसरी सहस्राब्दी में मानवता की शिक्षा' नामक अंतर्राष्ट्रीय पहलकदमी का नतीजा है। यह कार्यक्रम दुनिया भर में शैक्षिक नीतियों और व्यवस्थाओं के धरातल पर दिखाई दे रहे खास रुझानों को लेकर चिंतित शिक्षाविदों और विचारकों द्वारा शुरू किया गया कार्यक्रम था। महत्वपूर्ण सवालों पर तकनीकी और उपकरणवादी रवैया अपनाने की प्रवृत्ति, सरकारों और व्यावसायिक संस्थानों द्वारा व्यवस्थाओं पर कठोर नियंत्रण, आलोचनात्मक चिंतन में गिरावट, शिक्षा को अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ कर देखने की अनावश्यक प्रवृत्ति और शिक्षा संस्थानों व उनके सदस्यों पर जरूरत से ज्यादा प्रबंधकीय नियंत्रण जैसे रुझान लंबे समय से चिंता का विषय रहे हैं। इन रुझानों की वजह से ही शिक्षा आज दुनिया की समस्याओं को संबोधित और हल करने में पर्याप्त रूप से सफल नहीं हो पा रही है। शिक्षा अपने सबसे महत्वपूर्ण कार्यभार, यानी समाज की सोच और जनमत तैयार करने वाले मनुष्यों का समुदाय तैयार करने की जिम्मेदारी को पूरा नहीं कर पा रही है। आज के हालात को देखते हुए तो ऐसा लगता है कि शिक्षा खुद एक नई समस्या को जन्म देती जा रही है। आज शिक्षा व्यवस्थाएं दुनिया की गंभीर समस्याओं के प्रति गहरी उदासीनता और तटस्थता के रवैये को बढ़ावा देती दिखाई दे रही है।

साल 2019 में धर्मशाला, भारत में एक राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया था। इस कॉन्फ्रेंस में स्वयं दलाई लामा भी शामिल थे। कॉन्फ्रेंस के बाद *ह्यूमेनाइज़िंग एजुकेशन इन दि थर्ड मिलेनियम* नामक किताब भी प्रकाशित की गई। यह किताब स्प्रिंगर द्वारा 2022 में प्रकाशित की गई थी। सहभागियों के विचारों और कॉन्फ्रेंस के मुख्य निष्कर्षों के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय मसविदा समिति ने एक मसविदा घोषणापत्र यानी ड्राफ़्ट डिक्लेरेशन तैयार किया था। 2021–2023 में एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, लैटिन अमेरिका और ओशिएनिया में कई क्षेत्रीय राउंड टैबल कॉन्फ्रेंस आयोजित की गईं जिनमें इस मसविदे का विश्लेषण किया गया। इन विश्लेषणों के दौरन ड्राफ्टिंग कमेटी में कई नए सदस्य शामिल किए गए। फलस्वरूप, इस समिति में दुनिया भर के बहुत सारे देशों को प्रतिनिधित्व मिला और इस समिति ने मसविदे को अंतिम रूप दिया। लिहाजा, आज यह घोषणापत्र इस बारे में बहुत सारे शिक्षाविदों और विद्धानों के मतों और उम्मीदों का प्रतिनिधित्व करता है कि शिक्षा को कि तरह देखा जाना चाहिए और शिक्षा व्यवस्थाओं में जो कमियां और खामियां दिखाई दे रही हैं उनको किस तरह दूर किया जा सकता है।

इस घोषणापत्र का मुख्य उद्देश्य ये पता लगाना है कि आज दुनिया भर में शिक्षा के धरातल पर मुख्य समस्याएं और चुनौतियां क्या हैं। इसके अलावा, ये समझने पर भी जोर दिया गया है कि शिक्षा के उद्देश्य और मूल्य क्या हों तथा शिक्षा के अलग-अलग स्तरों पर शिक्षाशास्त्र के सामान्य सिद्धांत और संस्थागत पद्धतियां कैसी होनी चाहिए। यहां इस बात पर भी ध्यान दिया गया है कि तीसरी सहस्राब्दी में सामाजिक एवं राजनीतिक संकटों के संदर्भ में आर्टिफिशल इंटेलीजेंस और इस तरह की दूसरी तकनीकों के तीव्र विकास के युग में मनुष्य होने का क्या अर्थ है। इस बात पर भी ध्यान दिया गया है कि समूची मानव सभ्यता, पृथ्वी और उसके समग्र परिवेश के बीच किस तरह का संबंध होना चाहिए।

इस घोषणापत्र की मुख्य चिंता ये है कि अन्य मनुष्यों, समाज, प्रकृति तथा पृथ्वी की तमाम प्रजातियों और हर चीज के प्रति मनुष्य की क्या जिम्मेदारियां बनती हैं। इस नजरिये से मनुष्य होने के एक नए बोध का आवाह्न किया गया है। इसके लिए आज हमें मैत्री, प्रेम और नैतिकता की शिक्षा की जरूरत है। हमें सामूहिकता, एकजुटता, सहअस्तित्व, लोकतंत्र और आलोचनात्मक चिंतन को जागृत करने वाली शिक्षा की आवश्यकता है। राजनीतिज्ञों, व्यवसायियों, सांस्कृतिक और सार्वजनिक क्षेत्र की हस्तियों, मीडिया, परोपकारी संस्थानों और गैर-सरकारी संगठनों तथा शिक्षकों व शैक्षिक संस्थानों से आवाह्न है कि शिक्षा के भविष्य को निर्धारित करने वाली इस सार्वजनिक बहस में वे भी बढ़-चढ़कर अपना योगदान दें। इस जिम्मेदारी से भागने का अब कोई विकल्प नहीं है क्योंकि आज पृथ्वी के समूचे जीव जगत का स्थायित्व और भविष्य दांव पर लगा हुआ है।

पृष्ठभूमि

तीसरी सहस्राब्दी में हमारे सामने ऐसी स्थिति है जहां तमाम बड़े इंसानी और गैर-इंसानी ईकोसिस्टम एक-दूसरे पर निर्भर हैं, जीवन में जबर्दस्त अनिश्चितता पैदा हुई और हम वैश्वक संकटों से जूझ रहे हैं। पृथ्वी और समाजों के सामने पैदा हो रहे साझा संकटों की वजह से आज हमें शिक्षा और उसकी भूमिका पर भी नए ढंग से सोचने की जरूरत पैदा हो गई है। ऐसे में शिक्षाविदों के रूप में हमारी जिम्मेदारी है कि हम मानवता की शिक्षा की एक नई अवधारणा तैयार करें। यहां "मानवता" का आशय अर्थव्यवस्था और तकनीक के धरातल तक सीमित नहीं है बल्कि इसे मनुष्य के तमाम आयामों और शिक्षा में समाज की उपस्थिति के रूप में देखा जाना चाहिए। इसी तरह "शिक्षा' का आशय बाजार में खरीदी-बेचे जाने वाली सेवा से नहीं है बल्कि यह मौलिक मानवाधिकारों तथा टिकाऊ, समावेशी और न्यायसंगत विकास (यूनेस्को की परिभाषाओं के अनुरूप) की आधारशिला है। इसके साथ ही, मानवता की शिक्षा में मनुष्य को बृम्हांड के केंद्र में रखना भी उचित नहीं है बल्कि इसका आशय मानवता की जिम्मेदारियों और मानवीयता को केंद्र में रखने से है।

गौरतलब है कि आज शिक्षा पर राजनीतिक समुदाय का भारी वर्चस्व बना हुआ है। राजनीतिज्ञ अकसर मानव समाज को विभाजित करने की कोशिश करते हैं, खासतौर से शिक्षा के जरिए और शिक्षा में लोगों को एक-दूसरे के सामने खड़ा करने की कोशिश करते हैं। जहां एक तरफ मनुष्य व्यक्तिगत, कॉरपोरेट एवं सामूहिक स्वार्थ के दबाव में अकसर समस्याओं को जन्म देते हैं, वहीं वे अपनी सामर्थ्य और इंसानियत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के जरिए उन समस्याओं को हल भी कर सकते हैं। इस समाधान की खोज में योगदान देना शिक्षा का निहित दायित्व है। अब यह दायित्व पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। हमारा मानना है कि नए किस्म के शिक्षा संस्थान, पाठ्यचर्याएं और शिक्षाशास्त्र आज मानवता, मानव समाज और हमारे ग्रह के सामने पैदा हो रही चुनौतियों से निपटने में मदद दे सकते हैं।

प्रेक्षण

1. आज शिक्षा का जो स्वरूप दिखाई दे रहा है वह मनुष्य को एक आर्थिक इकाई के रूप में देखने और उसके तमाम दूसरे आयामों के अवमूल्यन की सोच से तय हुआ है। इस समझ की वजह से शिक्षा एक तटस्थ और अराजनीतिक प्रक्रिया बनकर रह जाती है, वह मनुष्य के विकास और मानवता के कल्याण के लिए उत्तरदायी समुदाय के निर्माण के उद्देश्य से कट जाती है।

2. दुनिया भर की शिक्षा नीतियों में प्रबंधनवादी, व्यावसायिक और सरकारी विचारधाराओं का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। इसकी वजह से शिक्षकों और शिक्षाविदों की पेशेवर और अकादमिक स्वायत्तता खत्म होती जा रही है, अध्यापक और विद्यार्थी केवल सप्लायर व कंज़्यूमर बनते चले जा रहे हैं। इसका एक नतीजा ये है कि प्रदर्शन प्रबंधन को ज्यादा महत्व दिया जा रहा है, तरह-तरह की परीक्षाओं और मूल्यांकनों को केंद्रीय महत्व दिया जाने लगा है, तकनीकी कसौटियों पर आधारित कुशलता और निगरानी केंद्रित उत्तरदायित्व संरचनाओं पर जोर दिया जाने लगा है।

3. व्यावसायिक लाभ-हानि पर केंद्रित विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, मैथमेटिक्स - स्टैम सब्जेक्ट्स) पर बहुत ज्यादा जोर देने की वजह से शिक्षा में मानविकी और समाज विज्ञानों के क्षेत्र में जो संकट पैदा हुआ है उससे लोगों और समाज की जिंदगी पर शिक्षा का प्रभाव और योगदान घटता चला जा रहा है।

4. राष्ट्र-राज्यों ने अध्यापकों और विद्यार्थियों, स्कूलों और विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता और स्वतंत्रता को सीमित कर दिया है। शिक्षकों और शिक्षाविदों के पास जो सीमित स्वतंत्रता उपलब्ध है उसका भी वे हमेशा पूरा सदुपयोग नहीं कर पाते। आज की शिक्षा पहलकदमी और स्वतंत्र चिंतन की जगह अनुपालन को प्रोत्साहन देने की प्रक्रिया बन कर रह गई है। शिक्षा के इस चरित्र को फौरन बदलने की जरूरत है;

5. अब शिक्षा व्यवस्थाओं में दूसरों के प्रति नफरत, हिंसा, राष्ट्रवाद और युद्ध का विरोध करने वाले मूल्य प्रदर्शित नहीं होते बल्कि बहुधा शिक्षा भी इस तरह की प्रवृत्तियों को बढ़ावा देती दिखाई देती है;

6. लोकलुभावनवादी राजनीति और समाधान लोगों को अकसर षड्यंत्र की कहानियों, अंधराष्ट्रवाद और दूसरों के मुकाबले अपने आपको श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्तियों का शिकार बना दिया है जिससे समाज में विभाजन और टकराव पैदा हो रहा है;

7. टकरावों, नफरत भरे प्रचार, मिथकों और विचारधाराओं से मुनाफा कमाने वाले मीडिया संस्थान देशों के भीतर और देशों के बीच तरह-तरह की हिंसा और टकरावों को भयानक रूप देते जा रहे हैं;

8. राजनीतिक अज्ञानता तथा लोकतंत्र के प्रति अनभिज्ञता से लोकतंत्रिक सिद्धांत और संस्थान कमजोर पड़ते चले जा रहे हैं तथा बहुत सारे समाजों में निरंकुशवादी प्रवृत्तियां बढ़ती चली जा रही हैं;

9. शिक्षा व्यवस्थाएं लोगों को इस बात के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं करतीं कि वे दुनिया के हालात पर सवाल उठाएं, बल्कि शिक्षा व्यवस्थाएं नियंत्रण में काम करने वाले व्यक्ति तैयार करने में लगी हुई हैं;

10. बुनियादी मानव मूल्यों, नैतिकता और परस्पर फिक्रमंदी पर जोर न दे पाने के पीछे एक हद तक इस बात का भी हाथ है कि शिक्षा मुख्य रूप से उपकरणवादी उद्देश्यों पर आश्रित होकर रह गई है;

11. आज की शिक्षा वायुमंडलीय एवं पारिस्थिकीय संकटों को संबोधित नहीं कर पा रही है और विद्यार्थियों को यह समझने के लिए तैयार नहीं कर पा रही है कि व्यक्ति-केंद्रित मानवता किस तरह दूसरी प्रजातियों, समूची प्रकृति को नष्ट करती जा रही है जिसके कारण पृथ्वी ही जीने के लिए असंभव जगह बनती जा रही है;

12. दुनिया के बहुत सारे भागों में सांस्कृतिक और आर्थिक उपनिवेशीकरण आज भी जारी है। इस उपनिवेशीकरण के भाषायी और दूसरे लक्षण शिक्षा में भी साफ दिखाई दे रहे हैं। ज्ञानोदय के आदर्शों और वैज्ञानिक तर्कशीलता से उपजी वैश्विक संस्कृति अब आर्थिक तर्कशीलता से संचालित होने लगी है। अब आर्थिक औचित्य ही प्रगति का मुख्य मापक रह गया है। इस तरह के मूल्यों से भरी शिक्षा बेहद व्यक्तिवादी, वर्तमान पर केंद्रित और सीमित उपकरणवादी तर्कशीलता से संचालित हो रही है जो मनुष्य को गैर-मनुष्य जगत से काट देती है। इसमें आदर्शों से प्रेरित अर्थ और मानवता व पृथ्सी के स्थाई अंतर्निभरता का अभाव है। ये तमाम देशज और प्रारंभिक सांस्कृतिक परंपराओं के मूल्य हैं जो संस्कृति, समुदाय, भावनाओं और परस्पर फिक्रमंदी पर जोर देते रहे हैं मगर अब उनकी उपेक्षा की जा रही है।

मुख्य चिंताएं

I. मनुष्य, समाज, संसार और शिक्षा के उद्देश्य

13. मनुष्य और समाज की निहित या व्यक्त अवधारणाओं के बिना शिक्षा की कोई कल्पना नहीं की जा सकती;

14. शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य प्रत्येक मनुष्य को सहायता देना है ताकि वह अपने भीतर सार्वभौमिक मानवीय विशेषताओं और क्षमताओं को पहचान सके और विकसित कर सके तथा अपनी व्यक्तिगत उभरती पहचानों को भी समझ सके;

15. शिक्षा से विद्यार्थियों को दूसरों की मान्यता के जरिए अपने भीतर अंतर्निहित मानवीय प्रतिष्ठा का एहसास होना चाहिए जिससे वे समाज में अपनी मौलिक संवैधानिक स्वतंत्रताओं का भी उपयोग कर सकें;

16. आज न केवल इस बात की पुष्टि करना जरूरी है कि हम कौन हैं, बल्कि साथ ही हमें ये भी देखना है कि हम क्या नहीं हैं, ताकि राजनीतिक, आर्थिक, सूचनात्मक, सांस्कृतिक, जैव-राजनीतिक धरातल पर चल रही उन असंख्य कोशिशों को समझ सकें जो हमारी पहचानों को निर्धारित करने का प्रयास कर रही हैं। शिक्षा का मकसद ये समझना भी है कि 'मनुष्य होने का क्या अर्थ होता है?'; 'हम किस तरह का मानव समाज निर्मित कर रहे हैं?'। इन सवालों को हमेशा जीवित रखना भी जरूरी है क्योंकि मनुष्य की संभावनाओं को कभी भी पूरी तरह साकार नहीं किया जा सकता;

17. शिक्षा को एक ऐसे उत्तरमानवीय युग की चुनौतियों से भी जूझना होगा जो मनुष्य की अवधारणा को आमूल बदलती जा रही है। इसके पीछे चौथी औद्योगिक क्रांति, सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस जैसी बहुत विशाल परिघटनाओं का हाथ है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस है तो इंसान की ही रचना मगर इसके बारे में हम मनुष्यों को कुछ बहुत महत्वपूर्ण फैसले और नैतिक कसौटियां व सिद्धांत तय करने होंगे। आज ये बात और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो उठी है कि हम मानव पहचान को नए

तकनीकी संसार के धरातल पर देखें तथा तमाम दूसरे जीवधारियों और समूचे पृथ्वी-ग्रह के साथ एक नए संबंध की कल्पना करें;

18. मनुष्य होने का एक मतलब ये भी है कि हम इस बात पर ध्यान दें कि मनुष्य होने का क्या मतलब है, हमें किस तरह की जरूरतों, आकांक्षाओं और उद्देश्यों पर ध्यान देने की जरूरत है। इसका संबंध मानवीव आनंद से भी और जीवन की सार्थकता से भी।। इससे ऐसे शैक्षिक उद्देश्य पैदा होते हैं जो मानव मात्र के स्वबोध पर और पारस्परिक संबंधों के परिणामस्वरूप पैदा होने वाली मान्यताओं पर आधारित है। ये आदर्श व्यक्तिगत आत्मसाकार, परस्पर संबंधों, हमदर्दी और फिक्रमंदी के आदर्श हैं;

19. आमतौर पर शिक्षा का स्वरूप सेक्युलर होना चाहिए मगर साथ ही उसे एक नैतिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध आंतरिक जीवन की उन जरूरतों पर भी ध्यान देना चाहिए जो कि अपने आप को समझने, आत्मरूपांतरण, अपनी सीमाओं के परे जाने की क्षमता और नई संभावनाओं के प्रति खुलेपन से संबद्ध होती हैं। लिहाजा हमें ये सुनिश्चित करना होगा कि मनुष्य विभिन्न प्रकार की सीमाओं, खासतौर से आध्यात्मिक सीमाओं को पार कर सकें;

20. मनुष्य केवल निजी स्वार्थ से ही संचालित नहीं होते। होमोइकोनोमिकस यानी 'आर्थिकता-केंद्रित मनुष्य' की अवधारणा देने वाले अकसर इसी बात पर जोर देते हैं। जी हां, मनुष्य परोपकारी भी हो सकते हैं और होते हैं। शिक्षा से इसके लिए मदद मिलनी चाहिए कि हम निःस्वार्स्थता को भी परिपक्वता की कसौटी बना सकें और ये भी देख सकें कि जीवित रहने के लिए और अपनी कमजोरियों से आगे जाने के लिए हम परस्पर सहयोग पर ही आश्रित रहते हैं। शिक्षा का एक मकसद ये होना चाहिए कि हम व्यक्तिगत, राष्ट्रीय या क्षेत्रीय, हर स्तर पर अपने स्वार्थी और व्यक्ति-केंद्रित रवैये से बाहर निकलें;

21. शिक्षा से विद्यार्थियों को दुनिया एक सजीव इकाई के रूप में मिलनी चाहिए। एक ऐसा सजीव तंत्र जिसकी अपनी चुनौतियां और संभावनाएं हैं। शिक्षा से विद्यार्थियों को ये क्षमता मिलनी चाहिए कि वे दुनिया की तमाम ईकाइयों के बीच निहित अंतर्संबंधों को समझ सकें, उन अंतर्संबंधों के बीच अपने स्थान को और इस दुनिया को को कायम रखने में मनुष्य की जिम्मेदारी को पहचान सकें;

22. दुनिया से बहुत सारी प्रजातियां खत्म होती जा रही हैं। मानव जीवन को कामय रखने की पर्यावरण की क्षमता खतरे में पड़ती जा रही है। लिहाजा, शिक्षा के जरिए हमें अपने विद्यार्थियों में बहुप्रजातीय न्याय और पृथ्वी के भविष्य के प्रति संवेदशीलता विकसित करनी है। लिहाजा, समूचे ग्रह के प्रति स्थानीय और वैश्विक स्तर पर साझा स्वामित्व और अपनेपन का भाव विकसित करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए;

23. शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक समाज को है। लिहाजा शिक्षा एक साझा जिम्मेदारी भी है। शिक्षा के उद्दश्यों और शिक्षा नीतियों को निर्धारित करने में नागर समाज, टीचर यूनियन्स, शैक्षिक संगठनों और विविध समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिका बनती है;

24. शिक्षा एक ऐसा सामाजिक संस्थान है जो विद्यार्थियों को एक साझा दुनिया में हिस्सेदार बनाता है। लिहाजा, शिक्षा व्यवस्थाओं के जरिए सामाजिक न्याय, खासतौर से हाशिए पर ढकेल दिए गए और संवेदनशील समाजों के लिए सामाजिक न्याय की नई गुंजाइश पैदा करनी चाहिए;

25. शिक्षा का एक मकसद ऐसे शिक्षित व्यक्ति के आदर्श को साकार करना भी है जो सामाजिक न्याय के लिए समर्पित हों। यानी, लोगों को लोक सेवा के लिए तैयार करना, खासतौर से व्यक्तिगत हित के लिए नहीं बल्कि सेवा के उद्देश्य से नेतृत्वकारी पदों और भूमिकाओं को ग्रहण करने के लिए तैयार करना चाहिए;

26. शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है और इसके प्रभाव भी पूरे समाज पर पड़ते हैं इसलिए विद्यार्थियों को हर दृष्टि से समाज के परिपक्व सदस्यों के रूप में तैयार करना शिक्षा का बुनियादी लक्ष्य हो जाता है। शिक्षा का लक्ष्य ये होना चाहिए कि वह विद्यार्थियों को सार्वजनिक जीवन में नीति निर्माताओं के साथ और नीति निर्माताओं के समकक्ष सहभागिता के लिए तैयार करे;

27. लोकतंत्र का एक आशय ये है कि निरंकुशवाद को रोका जाए और दूसरी तरफ विविधताओं और मतभेदों के प्रति आधारभूत सम्मान के साथ समावेशी और सामाजिक रूप से न्यायसंगत शासन व्यवस्था साकार की जाए। सांस्कृतिक लोकतंत्र इसका एक अभिन्न हिस्सा होता है। लोकतांत्रिक एवं आलोचनात्मक नागरिकता शिक्षा का मतलब है लोगों को एक-दूसरे के साथ सहअस्तित्व में, लचीले ढंग से और एक-दूसरे की भिन्नताओं के प्रति सम्मान के साथ जीने के लिए तैयार किया जाए।

28. शिक्षा व्यवस्थाएं सरकारों और राज्य नीतियों के अनुसार तय की जाती हैं मगर वास्तव में उनका दायरा और समय अवधि बहुत विस्तृत होती हैं। शिक्षा का एक मिशन है भावी पीढ़ियों को तैयार करना। इसका अंतिम अर्थ ये निकलता है कि अब तक के साझा अनुभवों को समझा जाए और उनका लाभ उठाया जाए तथा दूसरी तरफ बेहतर अनुभवों का रास्ता खोला जाए। यानी, साझा कल्पना पर आधारित भविष्य की तैयारी की जाए। इस प्रकार, शिक्षा का आशय मौजूदा स्थितियों के पुनरुत्पादन से नहीं है बल्कि इसका मकसद है आलोचनात्मक दृष्टि और रूपांतरण के लिए तैयार रहना;

29. उच्च शिक्षा की विशेष जिम्मेदारी है कि वो समाज को जटिल मामलों को संबोधित करने के लिए मदद दे और पहले से मौजूद समझदारी और तौर-तरीकों पर सवाल उठाने की मनोवृत्ति को सींचे;

30. शिक्षा, खासतौर से उच्च शिक्षा को सरकारी नीतियों को आगे बढ़ाने के साधन के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उच्च शिक्षा को एक ऐसे स्वायत्त जगत के रूप में देखा जाना चाहिए जहां सरकारी नीतियों की पड़ताल और विश्लेषण किया जाएगा, खासतौर से मानवाधिकारों को प्रभावित करने वाली नीतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण हो सकेगा;

31. एक-दूसरे के साथ होने वाली हिंसा मानव अस्तित्व के लिए पैदा हो रही समस्याओं का एक मुख्य स्रोत है। लिहाजा, शिक्षा का एक बहुत महत्वपूर्ण उद्देश्य ये सुनिश्चित करना है कि व्यक्तियों, समूहों और लोगों के बीच पैदा होने वाले टकरावों पर किस तरह सवाल खड़े किए जाएं। इसके अलावा, ये भी शिक्षा का ही लक्ष्य है कि वह लोगों को शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए जीने की शिक्षा दे और अपनी आकांक्षाओं और दृष्टिकोणों में टकराव के बावजूद एक-दूसरे को समझने के लिए प्रेरित करे;

32. कोई व्यक्ति शिक्षित हो, इसके लिए जरूरी है कि शैक्षिक लक्ष्यों में न केवल आलोचनात्मक क्षमताओं का समावेश किया जाए और दुनिया के वस्तुनिष्ठ ब्यौरों पर सवाल खड़ा करने की आदत विकसित की जाए बल्कि मानव संबंधों, आकाक्षाओं, भावनाओं और सोच के व्यक्तिगत आयामों के प्रति एक परस्पर समझदारी और हमदर्दी का रवैया भी विकसित किया जाए।

लिहाजा, शिक्षा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि मनुष्य न केवल अब तक के अर्जित ज्ञान और कौशलों में योगदान दे बल्कि उनके उत्तरोत्तर विकास में योदगान दे। इसके लिए समूचे व्यक्तित्व को तराशने के लिए, खासतौर से संसार और समाज के प्रति उसके नजरिए और प्रेरणाओं को आकार देने के लिए काम करना होगा।

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को अहिंसक ढंग से और सौहार्दपूर्वक अपने साथ जीने के लिए (आत्मनियमन एवं आत्मसंगठन), दूसरों की जिम्मेदारी लेने के लिए, अपने समाज और अपनी दुनिया की जिम्मेदारी लेने (दायित्व की नैतिकता) के लिए और इसके लिए तैयार करना कि वे अपनी सामाजिक, नागरिक और पेशेवर क्षमताओं के जरिए इन जिम्मेदारियों का निर्वाह करने के लिए तत्पर भी रहें।

II. मानवीय शिक्षा की रूपरेखा

सिद्धांत

तीसरी सहस्राब्दी के इन शुरुआती सालों में जो कुछ भी महत्वपूर्ण है उसके सहारे शिक्षा एक सघन और विस्तृत विकास प्रक्रिया का साधन बन सकती है। इन महत्वपूर्ण चीजों में स्वयं पृथ्वी और प्रकृति, उनमें जीवन का स्थान, संचार और समुदाय, पहचान (खासतौर से सांस्कृतिक पहचान), सुरक्षा, स्वास्थ्य, भावनाएं एवं आत्मअभिव्यक्ति, रचनात्मक सक्रियता विज्ञान व प्रौद्योगिकी भी शामिल हैं। शिक्षा एक समग्र पारिस्थितिकीय बोध से युक्त हो और मानवतावादी, लोकतांत्रिक तथा मानवाधिकारों के प्रति सम्मान पर आधारित हो। शिक्षा का एक उद्देश्य ये है कि वो जीवन की सुरक्षा, स्वास्थ्य, शरीर, समाज और अध्यात्मिकता, भावना और नैतिकता से जुड़े सारे आयामों पर ध्यान दे और नैतिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के लिए तैयार करे।

सिद्धांतों की दृष्टि से शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वे :

33. विद्यार्थियों को भीतर मनुष्य होने का अर्थ ढूंढने के लिए तैयार करें, उन्हें इंसानी विविधता को ध्यान में रखते हुए मनुष्यता का अर्थ समझने के लिए तैयार करें; विद्यार्थियों में दूसरों के साथ (यानी प्राकृतिक जगत की सारी इकाइयों के साथ) और स्वयं अपने साथ एक अर्थपूर्ण मानव जीवन की क्षमता विकसित करें। इसका मतलब है कि :

- विद्यार्थी के भीतर चीजों की एक निजी समझदारी विकसित की जाए जो शिक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए अंतर्विषयक शैक्षिक पद्धतियों का इस्तेमाल करना होगा। इसके लिए शिक्षा को केवल तर्कशील शिक्षा और कौशलों से आगे जाकर एक समग्र मानवीय शिक्षा की आधारशिला रखनी होगी। इसके लिए विद्यार्थियों को अपनी आकाक्षाओं, शरीर और भावनाओं के प्रति सचेत करना होगा। उन्हें हमदर्दी, अंतर्दृष्टि, कल्पनाशीलता और रचनाशीलता से लैस करना होगा, उन्हें संबंधों, मूल्यों, नैतिकता और दायित्व बोध से लैस करना होगा। इस प्रकार, विद्यार्थियों को सार्वजनिक और निजी, दोनों स्तरों पर नाना दिशाओं में काम करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए;

- मानविकी और समाज विज्ञानों की उल्लेखनीय हैसियत को बहाल किया जाए। मशीनों और ऑपरेटिंग सिस्टम्स के मॉडल को मानवता की समझ की रूपरेखा के रूप में नहीं अपनाया जाना चाहिए। इसकी बजाय विद्यार्थियों में तकनीक की भूमिका और प्रभावों को पहचाने और उनके प्रति एक अर्थपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने की क्षमता विकसित की जानी चाहिए। मानवीय शिक्षा के जरिए डिजिटल वातावरण का भी मानवीकरण किया जाना चाहिए;

- विद्यार्थियों को उनके जीवन के अनूठेपन का अहसास कराया जाए और उन्हें कठिनाइयों, पीड़ा और मृत्यु जैसी स्थितियों में भी साहस का परिचय देने के लिए तैयार किया जाना चाहिए;

- विद्यार्थियों में सक्रिय स्वचेतना प्रोत्साहित की जाए और उन्हें अपने प्रति सचेत रहना सिखाया जाना चाहिए;

- दूसरों के प्रति दोस्तानेपन और सम्मान के साथ संसार की दूसरी चीजों और व्यक्तियों से प्रेम करने की सामर्थ्य विकसित की जाए जिसके लिए संसार के साथ हमारे गहरे अंतर्संबंधों की चेतना हासिल करना बहुत जरूरी है;

34. पूरी पृथ्वी के लिए शिक्षा दें, जिसके लिए अंतर्निभरता का विज़न, चेतनाशील साझा दायित्व की नैतिकता और प्रकृति के साथ सौहार्दपूर्वक चलने वाली देशी संस्कृतियों सहित विविध परंपराओं में उपलब्ध ज्ञान को आत्मसात करने की चेतना भी आवश्यक है;

35. शांति की संस्कृति के भीतर एक बेहतर विश्व के आदर्श को साकार करें;

36. टकरावों की स्थिति में आक्रामकता और हिंसा के औचित्य पर सवाल खड़े करें, तमाम भिन्नताओं और मतभेदों के बावजूद मानव समानता के आधार पर व्यक्तियों और समुदायों के बीच शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का पाठ पढ़ाएं;

37. ऐसी आलोचनात्मक चेतना वाले और दायित्वबोध से लैस नागरिक तैयार करें जो लोकतांत्रिक कायदे-कानूनों और मूल्यों के प्रति समर्पित हों। इसका मतलब है कि लोकतंत्र को जीवन, संबंधों और चिंतन की एक शैली के रूप में पढ़ाया और अपनाया जाए;

38. आलोचनात्मकता के मुकम्मल अर्थ को सामने रखा जाए और विद्यार्थियों को सिर्फ 'आलोचनात्मक चिंतन कौशल' भर न सिखाया जाए। इसका मतलब है कि विद्यार्थियों में यथास्थिति पर सवाल उठाने, विभिन्न प्रकार के मूल्यों पर विचार करने और उन्हें चुनौती देने और दुनिया की विस्तृत कल्पनाओं और छवियों का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित की जाए;

39. इस बात को संबोधित किया जाए कि बहुत सारे विद्यार्थियों के पास संसाधनों, खासतौर से सूचनाओं की कमी नहीं है बल्कि वे उनकी अति से जूझ रहे हैं। विाद्यार्थियों को इसके लिए तैयार किया जाए कि वे महत्वपूर्ण और महत्वहीन का फर्क करना सीखें; निजी अर्थ ढूंढना सीखें; सूचना, ज्ञान और व्यावहारिक विवेक, सत्य और असत्य का अर्थ सीखें; वे सत्य को महत्व देना और उसके लिए आवाज उठाने का साहस सीखें;

40. शिक्षा में और शिक्षा के जरिए नस्ली समानता, जेंडर समानता, सामाजिक समानता को प्रोत्साहित किया जाए। खासतौर से जातीय, नृजातीय, प्रवासी, अल्पसंख्यक, गरीब, विकलांग आदि हाशियाई और संवेदशील समूहों के लिए नस्ली, लैंगिक और सामाजिक समानता सुनिश्चित की जाए;

41. शिक्षा को लोगों की जिंदगी और उनके सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक वातावरण के लिए प्रासंगिक बनाया जाए; स्थानीय समुदायों की असली समस्याओं को संबांधित किया जाए;

42. भाषाओं एवं लिपियों की विविधता को बचाएं और बच्चों को उनकी घरेलू भाषा को केंद्र में रखकर पढ़ाएं। इसके अलावा, आज आपस में गुथी हुई दुनिया कि लिए द्विभाषी या बहुभाषी शिक्षा तथा तकनीकी अनुवाद व्यवस्थाएं मुहैया कराएं;

43. संवादपरक एवं परस्पर सहयोग आधारित परिधियों का निर्माण करें। जो कुछ मान लिया गया है उसके आगे जाकर अन्वेषण, अनुसंधान, प्रश्न, जिज्ञासा और सोच को प्रोत्साहित करें। इस प्रक्रिया में चिंतनशीलता, अपने आप पर प्रश्न करने की प्रवृत्ति, खुलेपन और भिन्नताओं के लिए जगह रखें;

44. वयस्कों की दुनिया की सोच पर बच्चों की सहमति ही विकसित न करें बल्कि बच्चों की दुनिया और सोच पर वयस्कों की सहमति के लिए भी माहौल तैयार करें और अलग-अलग पीढ़ियों के बीच संवाद को बढ़ावा दें;

सांगठनिक आयाम

45. आज दुनिया भर में डीस्कूलिंग और गैर-स्कूली शिक्षा की अलग-अलग पद्धतियों का खूब बोलबाला दिखाई दे रहा है। मगर, शिक्षा व्यवस्था को एक ऐसी सार्वजनिक व्यवस्था के रूप में देखा जाना चाहिए जो शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच निश्चित कर सकती है। साथ ही इसे समाजीकरण के एक आवश्यक और उपयोगी साधन के रूप में देखना भी जरूरी है;

46. शिक्षा व्यवस्थाओं को ऐसे स्थानीय और वैश्विक मंच स्थापित करने चाहिए जिनके माध्यम से ये जाना जा सके कि बच्चे और नौजवान अपने स्कूलों और वयस्कों की दुनिया के बारे में क्या सोचते हैं;

47. स्कूलों और विश्वविद्यालयों का खर्चा और वित्तपोषण सरकार की जिम्मेदारी होनी चाहिए। इस बंदोबस्त पर नजर रखने का जिम्मा ऐसी संस्थाओं के ऊपर होना चाहिए जो अध्यापकों, विद्यार्थियों, परिवारों और समुदायों के हितों के प्रति लोकतांत्रिक ढंग से जवाबदेह हों;

48. ऐसे शिक्षा संस्थानों और नए सांगठनिक रूपों की जरूरत है जो उपकरणवादी पहलुओं की बजाए मानवीय पहलुओं को प्राथमिकता देते हुए शिक्षा के वास्तविक और गहनतर लक्ष्यों को साकार कर सकें;

49. शिक्षा नीतियों के जरिए शिक्षकों पर डाले जा रहे काम के बोझ और जवाबदेही के दवाबों में उल्लेखनीय कमी की जानी चाहिए। इसके अलावा, शिक्षा नीतियों में शिक्षक और नागर समाज की आवाज को भी समाहित किया जाना चाहिए। शिक्षक और प्रशासक को एक-दूसरे के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अध्यापकों की पूरी व्यवस्था में अपनी-अपनी अनूठी जगह होती है। लिहाजा, उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाए और केवल मेट्रिक्स या अतिसरलीकृत कसौटियों के आधार पर न आंका जाए;

50. अध्यापक शिक्षा संस्थानों का अभिन्न निर्णायक हिस्सा होते हैं। ये वो लोग हैं जो जानते हैं कि मनुष्य होने का क्या अर्थ है और विद्यार्थियों को कौन और किस तरह प्रेरित कर सकता है। शिक्षा नीतियों के माध्यम से अध्यापकों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे अपने मिशन के प्रति समर्पण और निष्ठा से काम करें क्योंकि इस तरह के बेहद संवेदनशील और महत्वपूर्ण काम को पूरा करने के लिए बहुत गंभीर पेशेवर रवैये की जरूरत है। एक पेशेवर व्यवसाय के रूप में शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य अध्यापकों में खुलेपन, संवाद, कल्पनाशीलता, समीक्षा और चिंतन की क्षमता विकसित करना होना चाहिए। साथ ही, शिक्षक शिक्षा से अध्यापकों में निजी अर्थ और मूल्यों की खोज को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए;

51. अध्यापकों को सम्मान, विश्वास, पर्याप्त तनख्वाह, शांतिपूर्ण जीवन और कार्य वातावरण में सुरक्षा की जरूरत है। लिहाजा, स्कूल चलाने वालों को पारस्परिकता, पारदर्शिता और परस्पर पोषण का रवैया अपनाना चाहिए ताकि अध्यापकों को भी फलने-फूलने का भरपूर मौका मिल सके;

52. शिक्षा में स्वायत्तता के लक्ष्यों को केवल तभी साकार किया जा सकता है जब अध्यापकों को स्वायत्त, लोकतांत्रिक रूप से संचालित संस्थानों में अपने स्तर पर भी स्वायत्तता और पेशेवर स्वतंत्रता दी जाएगी। शिक्षा व्यवस्थाओं को इस बात को समझना और सींचना चाहिए कि शिक्षक परिवर्तन के वाहक हैं और लिहाजा शिक्षकों और विद्यार्थियों का इस तरह सशक्तीकरण किया जाए कि वे पाठ्यचर्यात्मक एवं शिक्षाशास्त्रीय पद्धतियों के विकास और निर्धारण में सक्रिय भूमिका अदा कर सकें;

53. अध्यापकों के बीच शिक्षा के मूल्यों पर आधारित पेशेवर एकजुटता बहुत महत्वपूर्ण है। अध्यापकों और उनके पेशेवर समुदायों को इन मूल्यों के रक्षकों के रूप में मदद और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। शिक्षक शिक्षा के लिए एक ऐसी पद्धति अपनाने की जरूरत है जो कमजोर लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं वाले देशों में भी ऐसे अध्यापक तैयार कर सके जो सीमित स्वतंत्रता के

बावजूद न केवल सोचना जानते हों बल्कि सोचना सिखा भी सकें और यथाथिति पर सवाल उठाने की क्षमता भी प्रदान कर सकें;

54. शिक्षा संस्थानों को नागर समाज के साथ, खासतौर से मानवाधिकार एवं पर्यावरणीय गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर काम करना चाहिए।

अध्यापकों, विद्यार्थियों और अन्य सदस्यों के सबंधात्मक आयामों का मतलब है कि :

बच्चों और अन्य नौजवानों को उनके अनूठे व्यक्तित्व के रूप में देखा जाना चाहिए। उन्हें चिंतनशील और भावनाओं वाले व्यक्ति के रूप में देखा जाना चाहिए। उनकी पसंद-नापसंद और पहचानों को मान्यता दी जानी चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि :

55. अध्यापकों की एजेंसी यानी स्वचेतना को सम्मान दिया जाए, माता-पिता के साथ सहयोग का संबंध विकसित किया जाए और उन तमाम वयस्कों की अंतःप्रेरणा पर ध्यान दिया जाए जिनके ऊपर बच्चों की शिक्षा का जिम्मा है। अध्यापकों को अनावश्यक प्रबंधकीय अनुशासन का शिकार न बनाया जाए;

56. परस्पर सहयोग और संवाद पर आधारित तथा विद्यार्थियों की आवाज को सम्मान देने वाला गैर-सोपानिक तथा पारस्परिक टीचिंग-लर्निंग वातावरण तैयार किया जाए;

57. शिक्षाशास्त्रीय व्यवहार हमदर्दी और एक-दूसरे की सराहना पर आधारित होना चाहिए। इसके लिए विद्यार्थियों और अध्यापकों की भावनाओं को पूरी मान्यता मिलनी चाहिए;

58. विद्यार्थियों के विकास की प्रक्रिया में उनकी विशेषताओं तथा उनकी कठिनाइयों पर, खासतौर से समाज में जो कुछ हो रहा है उससे पैदा होने वाली कठिनाइयों पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए;

शैक्षिक गतिविधियों में इन चीजों को जगह दी जाए :

59. परिवर्तन का शिक्षाशास्त्र, जिसका मतलब है रूपांतरकारी लर्निंग तथा विद्यार्थियों को अपनी सीमाओं से आगे जाने के लिए तैयार करना;

60. विविधता का शिक्षाशास्त्र जो बच्चों की व्यक्तिगत लर्निंग शैली के प्रति संवेदनशील हो और उनकी विविधता का भी सम्मान करे। ऐसा शिक्षाशास्त्र जो संवादपरक हो, सिर्फ एक 'ज्ञान' को नहीं बल्कि 'नाना प्रकार की ज्ञान व्यवस्थाओं' को बहुत सारे शिक्षाशास्त्रीय और मूल्यांकन मॉडल अपना सके;

61. एक ऐसा जागृति शिक्षाशास्त्र अपनाया जाए जो सघनता, आत्मजागृति, आत्मनियमन और आत्मसाकार में अपने परिवेश और अपने आप को देखने की प्रक्रिया का रूप ले;

62. विद्यार्थियों द्वारा अपनी स्वतंत्रता और दुनिया में अपनी भूमिका की खोज और अन्वेषण के लक्ष्य पर केंद्रित दायित्व का शिक्षाशास्त्र;

63. मानवता और तमाम जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम और फिक्रमंदी के साथ सोचने और कदम उठाने के लिए जरूरी है कि विद्यार्थी दैनिक स्तर पर इस बात का अभ्यास करें। ग्रेड्स, कॅरियरवाद और आत्मकेंद्रित सफलता पर आश्रित मौजूदा प्रवृत्तियों को संतुलित करने के लिए समूचे समुदाय को साथ लेकर चलना होगा;

64. भावी पीढ़ियों की खातिर इस ग्रह की रक्षा जरूरी है। लिहाजा जीवन के साझापन की रक्षा हेतु शांति और दर्शन की संस्कृति निर्मित करने वाला जीवन का शिक्षाशास्त्र;

65. एक गतिविधि आधारित शिक्षा और प्रयोगधर्मी शिक्षाशास्त्र अपनाया जाए जो बच्चों की अपनी गतिविधियों, उनके जीवन अनुभवों पर आधारित हो। उनके ये जीवन अनुभव औपचारिक व्यवस्था के भीतर और बाहर, कहीं के भी हो सकते हैं;

66. एक ऐसा शिक्षाशास्त्र जो विद्यार्थियों को एक जटिल विश्व में उद्देश्यपूर्वक जीने के लिए, कठिनाइयों के सामने हिम्मत से डटे रहने के लिए, अंतर्विरोधी परिस्थितियों और विचारों से सीखने के लिए और तनाव के स्रोतों को चिन्हित करने के लिए तैयार करे। समाज में दिखाई देने वाले दबावों और हानिकारक नीतियों का सामना करने के लिए संघर्ष करने का जज्बा और संकल्प जरूरी होता है। खुद अपने पूर्वाग्रहों और कठोर मतों को पहचानने और उनको चुनौती देने के लिए भी अपने साथ संघर्ष की जरूरत होती है;

67. अर्थनिर्माण का एक ऐसा शिक्षाशास्त्र जिससे विद्यार्थियों को समीक्षा और तर्कशील अन्वेषण के सहारे अर्थ ढूंढने में मदद मिले और वे व्यक्तिगत और सामाजिक अर्थों का निर्माण कर सकें;

68. पर्यावरण का शिक्षाशास्त्र क्योंकि शिक्षा एक सामाजिक, सांस्कृतिक और क्षैतिज-मनोगत वातावरण में ही संपन्न होती है;

69. अध्ययन कार्यक्रमों में पाठ्यचर्येतर तथा अनौपचारिक लर्निंग गतिविधियों का भी इस्तेमाल किया जाए ताकि शैक्षिक अनुभव और समृद्ध हों;

70. विद्यार्थियों के बीच परस्पर लर्निंग और पीयर ग्रुप असेस्मेंट का शिक्षाशास्त्र अपनाया जाए। अध्यापक और विद्यार्थी मिलकर एक-दूसरे को समझने का प्रयास करें और अध्यापक भी विद्यार्थियों से सीखने के लिए एक खुलेपन का रवैया अपनाते रहें;

71. क्षितिजों का शिक्षाशास्त्र : विचारों और परिप्रेक्षों के अंतर्सांस्कृतिक आदान-प्रदान के रूप में संस्कृतियों का संवाद जिससे गलतफहमियां दूर हों तथा सीरियोटाइप्स और पूर्वाग्रहों पर विजय पाने में मदद मिले; खासतौर से अंतर्धार्मिक संवाद;

72. एक ऐसा आलोचनात्मक डिजिटल शिक्षाशास्त्र जिसमें बच्चों और नौजवानों को ये पढ़ाया जा सके कि वे मीडिया में फर्क कैसे करें, डेटा की व्याख्या कैसे करें, सूचना एल्गोरिदम को कैसे समझें ताकि मीडिया, सोशल नेटवर्कों तथा विज्ञापन जगत में सूचना के प्रवाहों को समझ सकें और उनके माध्यम से अपने जीवन के साथ होने वाली छेड़छाड़ को रोक सकें;

73. विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता और सौंदर्यात्मक सामर्थ्यों को सींचने के लिए खेलकूद आधारित, विजुअल एवं प्रदर्शनमूलक गतिविधियां। विद्यार्थियों को ये सिखाया जाए कि वे तस्वीरों व छवियों को न केवल सूचना के रूप में बल्कि एक सांस्कृतिक यथार्थ के रूप में भी देखें और ये समझें कि तस्वीरों के सम्मोहन पर क्या रवैया अपनाएं;

74. पढ़ाने के तरीकों और बच्चों की उपलब्धियों को मापने के अहिंसक और गैर-आक्रामक तरीके अपनाए जाएं। सार्वजनिक रैंकिंग और ऐसे सकल मूल्यांकनों का कम से कम इस्तेमाल किया जाए जो बच्चों का हौसला तोड़ते हैं, खासतौर से शुरुआती सालों में उनके आत्मविश्वास को कमजोर कर देते हैं;

75. इस बात के लिए दबाव डाला जाए कि दुनिया भर में विद्यार्थियों का ज्यादातर शैक्षिक मूल्यांकन सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक, नागरिक, सांस्कृतिक/पर्यावरणीय संवेदनशीलता आदि मानवीय आयामों पर आधारित हो;

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इन सिद्धांतों और विचारों को लागू करने के लिए हमें खास कार्यपद्धतियां अपनानी होंगी।

***प्राथमिक शिक्षा** / प्रीस्कूल एवं प्राइमरी स्कूल शिक्षकों को चाहिए कि वे :*

76. हर बच्चे के प्रति फिक्रमंदी का रवैया अपनाएं; हर बच्चे के विकास के लिए, खासतौर से उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए एक खास माहौल तैयार करें;

77. बच्चों में खुलेपन का रवैया विकसित करें। उनमें संवेदनशीलता, हमदर्दी, एक-दूसरे की फिक्र और प्रकृति के प्रति निकटता का भाव विकसित करें। ऐसी परिस्थितियां तैयार करें जिनमें वे मिलजुलकर अपनी, एक-दूसरे की और अपने ग्रह की सुरक्षा व हित के लिए काम कर सकें;

78. मनुष्यों, जीवधारियों, प्रकृति और तकनीक के संबंध में आदर्श मानवीय व्यवहार का मॉडल पेश करें;

79. प्रयोगधर्मी शिक्षा के जरिए और विद्यार्थियों की स्थानीय जगहों व समुदायों को केंद्र में रखकर बच्चों को अपने साथ जोड़ें;

80. बच्चों को रचने, बूझने और खोजने के लिए प्रोत्साहित करें मगर उन्हें गलतियां करने की छूट दें;

माध्यमिक शिक्षा */ शिक्षकों को चाहिए कि वे :*

81. सीखने के सफर में सबसे संवेदनशील समूहों को पूरी सहायता दें, उनकी सामाजिक प्रगति के लिए और उनके रास्ते में आने वाली असमानताओं से पार पाने के लिए सहायता दें;

82. औपचारिक पाठ्यचर्या तथा हिडेन/प्रच्छन्न पाठ्यर्चा को संतुलित करने के लिए कौशल प्रशिक्षण तथा दिमागी, व्यक्तिगत, सामाजिक एवं नागर विकास की दिशा में केंद्रित कामों की तैयारी पर जोर दिया जाए;

83. एक ऐसी मूल्यांकन व्यवस्था तैयार की जाए जो शैक्षिक उद्देश्यों के लिए भी और विद्यार्थियों के पूर्ण विकास में भी सहायक हो;

84. अपने क्रियाकलापों से आशा का बोध विकसित किया जाए ताकि बच्चे अपने इलाके और समुदायों के साथ गहरे जुड़ाव के साथ विकसित हों और उन्हें ये मालूम हो कि वे लोगों, पौधों, पशुओं, कीट-पतंगों और तमाम जीवधारियों के लिए हमेशा कुछ न कुछ करने में सक्षम हैं;

85. बच्चों को अपने समुदाय के महत्वपूर्ण सदस्य और योगदान कर्ता के रूप में पूरा सम्मान दिया जाए, उनकी आवाजों को सुना जाए और उनके विचारों का स्वागत किया जाए;

86. राष्ट्रीय से वैश्विक परिप्रेक्ष्य तक सभी प्रकार की समस्याओं के प्रति एक ज्यादा विस्तृत दृष्टिकोण अपनाया जाए;

87. प्रत्येक विद्यार्थी को साझा हित, मानवाधिकारों के प्रति सम्मान और लोकतांत्रिक सांगठनिक मॉडल व प्रणालियों का महत्व सिखाएं;

88. विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करें कि वे साइबरनेटिक्स, इंटरनेट और सोशल नेटवर्कों का सोच-समझकर इस्तेमाल करना सीखें; उन्हें अन्वेषण के लिए, अर्थ खोजने के लिए, खासतौर से अपने प्रसंग में चीजों को देखने के लिए तैयार करें;

89. निरीश्वरवादियों और नास्तिकों सहित सभी प्रकार की सामुदायिक, नृजातीय एवं धार्मिक विविधता का सम्मान करें।

आगे की शिक्षा */ शिक्षकों को क्या करना चाहिए :*

90. सभी प्रकार के श्रम को सम्मान दें और बौद्धिक, प्रयोगधर्मी और व्यावहारिक शिक्षा के बीच खड़े किए गए कृत्रिम भेद को चुनौती दें;

91. विद्यार्थियों को वोकेशलन कौशल के बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक आयाम स्पष्ट हों;

92. विद्यार्थियों को अपनी वोकेशनल शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक ढंग से सोचने के लिए तैयार करें;

93. विद्यार्थियों को अपने काम में निजी और सार्वजनिक सार्थकता को पहचानने के लिए मदद दें;

उच्च शिक्षा */ फैकल्टी को चाहिए कि वे :*

94. उच्च शिक्षा की एक ऐसी नैतिकता विकसित करें जो भू-राजनीति और बड़ी कंपनियों, दोनों से स्वतंत्र हो और जो समाजों, मानवता और पृथ्वी की दूसरी प्रजातियों के कल्याण के लिए समर्पित हो;

95. विद्यार्थियों में वह तटस्थता पैदा न होने दें जो कथित रूप से वस्तुनिष्ठता के सिद्धांत से पैदा होती है बल्कि उनमें अपने जीवन और समाज के जीवन के प्रति दायित्व का सचेत बोध पैदा करें। उन्हें इस बारे में सोचने के लिए भी शिक्षा दें कि वे अपने ज्ञान से क्या लाभ हासिल कर सकते हैं और किस तरह की हानि को जन्म दे सकते हैं;

96. किसी भी उपलब्ध रूपरेखा या विचार को चुनौती देने के लिए विद्यार्थियों में एक आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करें; उन्हें प्रत्येक अध्ययन कार्यक्रम को विस्तृत जगत के साथ जोड़कर देखने और अपनी क्षमताओं को इस तरह संवारने के लिए प्रेरित करें कि वे समाज के जटिल मामलों को हल करने के लिए सक्षम हों;

97. ऐसी पाठ्यचर्याएं तथा शोध गतिविधियां संचालित करें जो अंतर्विषयक हों, पृथ्वी पर सभी जीवधारियों के स्थायित्व के लिए अनुकूल हों और संसार के विस्तृत हित पर आधारित हों;

98. एक ऐसा अकादमिक समुदाय विकसित करें जो अपने स्तर पर और तमाम समाजों में आजादी के लिए प्रतिबद्ध हो, जो कठिन और अलग-अलग हालात में भी सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता रखता हो;

वयस्क एवं सामुदायिक शिक्षा/शिक्षकों को चाहिए कि वे :

99. आजीवन शिक्षा को प्रोत्साहन दें और उसे सभी वयस्कों के लिए पूरी जिंदगी उपलब्ध कराएं;

100. समाज में, खासतौर से नागरिक समाज के मामलों में व्यक्तिगत सहभागिता और सक्रियता के दायरों को विस्तार दें;

101. सांस्कृतिक एवं राजनीतिक शिक्षा को शामिल करें और दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक मामलों पर चर्चा करें तथा वयस्कों को अपने जीवन का अर्थ बूझने के लिए मदद दें;

102. पीढ़ियों के बीच संवाद को बढ़ावा दें, वयस्कों में अपनी दुनिया, समाज और आने वाली पीढ़ियों के प्रति जिम्मेदारी का भाव पैदा करें और उन्हें आने वाली पीढ़ी की शिक्षा में सहभागिता के लिए तैयार करें;

103. समुदाय के कल्याण और लोकतंत्र को बढ़ावा देने के लिए नागर समाज संगठनों की क्षमताएं विकसित करें;

104. वैश्विक समस्याओं के प्रति सामूहिक चिंता व्यक्त करें और उनके समाधानों में भी समुदाय के रूप में योगदान दें;

गैर-औपचारिक शिक्षा को चाहिए कि वह :

105. ऐसे दायरे तैयार करे जहां ऐसी ज्ञान व्यवस्थाओं को मान्यता मिले और उनसे सीखा जा सके जोकि एक-दूसरे से ऊपर नीचे नहीं बल्कि समुदायों और व्यक्तियों के बीच समानांतर पैदा होती हैं;

106. स्कूल के भीतर और बाहर शैक्षिक दायरे तैयार करें जहां से शिक्षा को विकल्पों की दिशा में आगे बढ़ाया जा सके;

107. विभिन्न सामाजिक समूहों, खासतौर से अलग-अलग पीढ़ियों और अंतरसांस्कृतिक समूहों के बीच आदान-प्रदान के लिए शहरों में सवाद के सामूहिक दायरे तैयार करें;

108. वंचित आबादियों, खासतौर से एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका की हाशियाई आबादियों की जरूरतों पर ध्यान दिया जाए। उन्हें औपचारिक शिक्षा हेतु सामाजिक सहायता देने के साथ-साथ शिक्षा में इन बातों का भी समावेश करना चाहिए :

- स्थानीय ज्ञान एवं संस्कृति के संबंध में तथा मानव चेतना से संबंधित अनौपचारिक प्रबोधन एवं शिक्षा (स्वाभिमान, मूल्यों की समझ, सुख का बोध); सामाजिक, नागरिक चेतना विकसित की जाए; सांस्कृतिक चेतना (राष्ट्रीय संस्कृति, विश्व संस्कृति) विकसित की जाए; पारिस्थितिकीय जागरूकता पैदा की जाए; वैज्ञानिक और आधुनिक विश्व दृष्टिकोण विकसित किया जाए; उनमें अपने समुदायों और रोजगारों की रक्षा के लिए एक्टिविज़्म को बढ़ावा दिया जाए और उन्हें ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे अपना प्रतिनिधित्व भी कर सकें और उन्हें अपने लिए बोलने वाले अन्य लोगों की जरूरत न पड़े;

- बच्चों और युवाओं के लिए प्रीस्कूल से विश्वविद्यालय तक तथा वयस्कों के लिए गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम शुरू किए जाएं। ये कार्यक्रम सस्ते फोन जैसे साधनों के जरिए और तरह-तरह के पाठ्य, दृश्य एवं ध्वनि रूपों में मुहैया कराए जाएं।

III. प्रस्तावित कार्यपद्धतियां एवं क्रियाएं

हम शिक्षा नीति निर्धारकों से आह्वान करते हैं कि वे इन शैक्षिक मूल्यों, लक्ष्यों और आदर्शों को अपनाएं। हम शिक्षा संस्थानों एवं शिक्षाविदों से भी अपील करते हैं कि वे नई कल्पनाशील टीचिंग-लर्निंग पद्धतियों के जरिए इन मूल्यों, लक्ष्यों और आदर्शों को साकार करें ताकि विद्यार्थियों को एक कठिन दुनिया में अपनी समग्र मानव संभावनाओं को साकार करने में मदद मिल सके। इसके साथ ही, हम राजनीतिज्ञों, व्यवसायियों, सांस्कृतिक एवं सार्वजनिक जगत में सक्रिय लोगों, फाउंडेशनों, गैर-सरकारी संगठनों व अन्य संस्थानों से भी अपील करते हैं कि वे अपनी साझा जिम्मेदारियों को पहचानें, अपनी सहभागिता बढ़ाएं और समूची मानवता की शिक्षा के लिए अपना योगदान दें। हम सरकारों, राष्ट्रीय निकायों, वित्तीय संस्थानों, स्थानीय समुदायों और मीडिया के स्तर पर कार्रवाईयों के लिए आह्वान करते हैं।

हम आशा करते हैं कि इस घोषणापत्र से शैक्षिक और सार्वजनिक बहसों में भी मदद मिलेगी और लोगों को शिक्षा की पुनर्कल्पना और उन्नति के हित में काम करने का प्रोत्साहन भी मिलेगा। हम आशा करते हैं कि सरकारें तथा अन्य प्रमुख सत्ता संस्थान व सत्ता केंद्र उन जिम्मेदारियों और संभावनाओं पर सकारात्मक ढंग से विचार करेंगे जो इस दस्तावेज से प्रतिबिंबित हो रहे हैं।

यहां हमने एक मुकम्मल मनुष्य बनने की अवधारणा को सामने रखा है जो आने वाले दौर के नए विचारों और नए व्यवहारों के अनुसार नए रूप ग्रहण कर सकती है। हमारा मानना है तीसरी सहस्राब्दी के लिए शिक्षा के रूपांतरण की इस रचनात्मक प्रक्रिया में शिक्षा जगत के प्रत्येक व्यक्ति को अपना योगदान देना चाहिए।

परिशिष्ट

यह घोषणापत्र 'तीसरी सहस्राब्दी में मानवीय शिक्षा' शीर्षक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम की रूपरेखा के रूप में तैयार किया गया है।

इस घोषणापत्र और इसके विचारों को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया 2019 से 2024 तक चलाई गई। इस प्रक्रिया में 79 देशों के विद्वानों और शिक्षाविदों ने अपना योगदान दिया है। उनका ब्यौरा इसे प्रकार है :

एशिया

अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भारत, ईरान, इजराइल, जापान, कजाकिस्तान, मलेशिया, मंगोलिया, नेपाल, ओमान, पाकिस्तान, कतर, सऊदी अरब, ताइवान, दि वेस्ट बैंक, फिलिस्तीन राज्य, उजबेकिस्तान, यमन।

यूरोप

ऑस्ट्रिया, बुल्गारिया, चेक रिपब्लिक, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस, आयरलैंड, इटली, पोलैंड, पुर्तगाल, रूस, स्लोवेनिया, स्वीडन, तुर्की, युनाइटेड किंगडम, यूक्रेन।

अफ्रीका

अल्जीरिया, अंगोला, कैमरून, कोट-डी-आइवरी, मिस्र, इथियोपिया, गेबॉन, कीनिया, मेडागास्कर, मोरक्को, मोज़ांबीक, नामीबिया, नाइजर, नाइजीरिया, डीआरसी, सेनेगल, दक्षिण अफ्रीका, तंज़ानियां, चाड, ट्यूनीशिया।

ओशयानिया

ऑस्ट्रेलिया, फिजी, हवाई, न्यूज़ीलैंड, पापुआ न्यूगिनी, फिलीपींस, सोलोमन आईलैंड्स।

उत्तरी, मध्य एवं दक्षिणी अमेरिका

अर्जेंटीना, बेलीज़, ब्राज़ील, कनाडा, चिली, कोलंबिया, इक्वेडोर, एल सल्वाडोर, ग्वाटेमाला, होंडुरास, मैक्सिको, निकारागुआ, पनामा, पेरागवे, पेरू, उरूग्वे, संयुक्त राज्य अमेरिका।

अंतर्राष्ट्रीय ड्रॉफ्टिंग कमेटी के सदस्य

रोनॉल्ड बारनेट (लंदन, यूके), टीमो आइराक्सिनेन (हेलसिंकी, फिनलैंड) वॉल्टर कोहान (रियो डे जिनेरियो, ब्राज़ील), पूनम बत्रा (दिल्ली, भारत), स्कॉट वेब्स्टर, (मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया), कैथलीन लिंच (डबलिन, आयरलैंड), फेलिक्स मारिंज (जोहानेसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका), जॉन वीवर (स्टेट्स बोरो, अमेरिका), एनरीक मार्टिनेज़ लारेचा (मोंटेवीडियो, उरूग्वे), यूसुफ वागहीड (स्टेलेन बॉश, दक्षिण अफ्रीका), यिर्गा गेलॉ वोल्डेज (पर्थ, ऑस्ट्रेलिया), राजश्री श्रीनिवासन (बंगलोर, भारत), मार्गरिटा कोचेवनिकोवा (सेंट पीटर्सबर्ग, रूस)।